शिवशक्ति सरस्वती माँ

50. मातेश्वरी जी का यज्ञ से बहुत स्नेह था। वे कहा करती थीं कि यज्ञ की कोई चीज़ बेकार नहीं जानी चाहिए। एक बार की बात है कि यज्ञवत्स गेहूँ साफ़ करके बोरी में भर चुके थे। कुछ गेहूँ इधर-उधर बिखरे हुए थे। मातेश्वरी जी ने ध्यान दिलाते हुए बड़े ही स्नेह से कहा कि एक-एक गेहूँ का दाना एक-एक मोहर के बराबर है। वे यज्ञ की एक-एक चीज़ की कीमत जानती थीं एवं बतलाती भी थीं। वे कुशल प्रबन्धक थीं। यज्ञवत्सों की स्थूल के साथ सूक्ष्म आध्यात्मिक पालना पर भी उनका विशेष ध्यान रहता था।

51. मम्मा कुशल प्रशासक के रूप में छोटी उम्र में ही यज्ञ-कारोबार की ज़िम्मेवारी सम्भालने के निमित्त बनीं और सभी के दिलों को जीत लिया। मम्मा सदैव कहा करती थीं कि किसी के भी अवगुणों का चिन्तन न कर, सदा गुणग्राही बनना चाहिए। सभी आत्माओं की विशेषताओं को देखो, हंस की तरह मोती चुगो।

52. मम्मा ख़ुद धारणामूर्त होने के कारण धारणा की क्लास ही ज़्यादा कराती थीं। वो क्लास सबको बहुत आकर्षित करती थी। मम्मा ने अमृतवेला कभी मिस नहीं किया। एक बार मुंबई में एक मंत्री जी मम्मा से मिलने आये। मंत्री जी के जाते-जाते रात के बारह बज गये। दूसरे दिन मम्मा अपनी दिनचर्या के अनुसार सुबह दो बजे ही उठी। उनसे पूछा गया मम्मा, आप तो क़रीब एक बजे सोयी होंगी फिर आप अपने समय पर इतनी जल्दी उठ गयी ? तब मम्मा ने कहा, देखो उस मिनिस्टर की अपॉइन्टमेण्ट के कारण मैं रात को जाग सकती हूँ तो सवेरे अमृतवेले मेरी अपॉइन्टमेंट हमारे पियू के साथ होती है, यह हम कैसे मिस कर सकते हैं ? मम्मा ने कभी अमृतवेला मिस नहीं किया।